| | | |
|---|---|---|
| 1 | ॐ | ॐ नमः सिद्धम्! |
| 2 | अँ | अँ, अँ... अनि के भयो? |
| 3 | अंश | मेरा दिन र रातको धेरै अंश त्यहीँ बित्ने गर्थ्यो। |
| 4 | अक्षर | मैले बिस्तारबिस्तार बाको अक्षरको नक्कल गर्न सिकेँ। |
| 5 | अखबार | खबर रेडियो र अखबारहरूले देशभर तुरुन्तातुरुन्तै फैलाउने सुविधा थियो। |
| 6 | अख्तियार | निजामती– सेवासम्बन्धी सबै अख्तियार कितापी सुब्बा एक जनाको हातमा हुन्थ्यो। |
| 7 | अगाडि | मलाई हरदम भनेजस्तो आफ्नै अगाडि भएको हेर्न चाहनुहुन्थ्यो। |
| 8 | अग्लो | म अग्लो कान्लाबाट हामफालेँ। |
| 9 | अघि | यो धेरै अघिको घटनाको मलाई हेक्का छैन। |
| 10 | अङ्क | 'शारदा' पत्रिकाको आउँदो चैत्रको अङ्कमा मेरो 'गरिब' कथा प्रकाशित भयो। |
| 11 | अङ्ग | यी हाम्रो परिवारकै एक अङ्गझैँ लाग्थे। |
| 12 | अचार | एक सुका तिरेपछि त्यहाँ एक जनाले खाएजति दाल, भात, तरकारी, अचार खान पाउँथ्यो। |
| 13 | अझ | यो अझ सबैभन्दा ठूलो कुरो हो। |
| 14 | अठार | हामी सत्र–अठार वर्षका उरन्ठ्याउला केटाहरू थियौँ। |
| 15 | अठोट | तर मैले आफ्नो अठोट छोडिनँ। |
| 16 | अडान | मैले साहित्यिक गतिविधि मात्र गरेको कुरामा अडान लिएँ। |
| 17 | अति | म हजुरबाको अति ममता र अनुशासनको मातहतमा हुर्कें। |
| 18 | अथवा | पैदलै अथवा उलिन्काठ वा डोको चढेर भीमफेदी पुग्नुपर्थ्यो। |
| 19 | अधिकांश | तर यो सडक साँगुरो र कच्ची थियो; घरहरू पनि अधिकांश कच्ची नै थिए। |
| 20 | अध्ययन | मैले त्यतिखेरको संसारको अध्ययन गर्दै गएँ। |
| 21 | अनुरोध | त्यसैले मेरा माथिका उच्चारणका त्रुटिहरूलाई ख्याल नगरिदिनुहुन अनुरोध गर्दछु। |
| 22 | अनुरोध | म उसको यो प्रेमपूर्ण अनुरोधलाई साँच्चै उसको प्रणयनिवेदन नै ठान्थेँ। |

| | | |
|---|---|---|
| 23 | अनुवाद | त्यतिखेर मैले आफूलाई साँच्चै एउटा परीदेशको राजकुमारमा अनुवाद भएको अनुभव गरेँ। |
| 24 | अनुसन्धान | यो त अनुसन्धानको विषय हो। |
| 25 | अनेक | ऊ मामासँग अनेक खालका प्रश्नहरू गर्थी। |
| 26 | अन्न | शिरमाथि एउटा छत र दुई छाक खान दुई मुठी अन्नको जगेर्ना हुन सकोस्। |
| 27 | अप्ठेरो | एउटा सशङ्क स्थिति; एउटा अप्ठेरो अनुभूति। |
| 28 | अप्ठ्यारो | मैले बडो अप्ठ्यारो मान्दै बिखर्ची भएको कुरा बताएँ। |
| 29 | अफिस | त्यतिखेर जिल्लामा कुनै पनि सरकारी अफिस थिएनन्। |
| 30 | अभाव | मलाई कुनै कुराको अभाव वा खाँचो छैन। |
| 31 | अभ्यास | रेखा सफा नभै चित्रकलाको अभ्यास हुनै सक्तैन। |
| 32 | अरू | म एक दिन बद्री र अरू साथीहरूसँग खेलिरहेको थिएँ। |
| 33 | अर्को | बाको अर्को एउटा परिवार बौद्ध बजारमा थियो। |
| 34 | अर्थ | त्यस विरोधको अर्थ र महत्व मलाई नै थाहा थिएन। |
| 35 | अलग्गै | तर यिनीहरूबाट अलग्गै एउटा अर्को कैदी थियो— हंशी राजवंशी। |
| 36 | अलिअलि | हो, उसको कपाल अलिअलि कैलो थियो। |
| 37 | अवस्था | आज चारकोसे झाडीको अवस्था ठाउँठाउँमा भुत्ला खुइलिएको च्याङ्ग्रोझैँ लाग्छ। |
| 38 | अशोक | त्यतिखेरका जल्दाबल्दा युवक अशोक थिए। |
| 39 | अस्पताल | उहाँलाई वीर अस्पताल भर्ना गर्नुपर्‍यो। |
| 40 | अहिले | त्यस ठाउँको नाउँ अहिले सम्झना छैन। |
| 41 | आ | मैले अ आ इ उ पहिलो पाठमा पढेँ। |
| 42 | आँ | मलाई हरदम भनेजस्तो आफ्नै आँखाअगाडि भएको हेर्न चाहनुहुन्थ्यो। |
| 43 | आँखा | चार महिनामै मेरा आँखा दुख्न थाले। |
| 44 | आँगन | म मोतीलालको आँगनमा खेलिरहेको थिएँ। |

| | | |
|---|---|---|
| 45 | आँटे | उसले बालपनको आखिरी खुट्किलो पार गरेर किशोरवयको खुट्किलोमा टेक्नटेक्न आँटेको थियो। |
| 46 | आँप | ढिस्काढिस्कीको पूर्व लिची, आँप र अरू रूखहरूको बगैंचा थियो। |
| 47 | आइपुग्यो | केहीबेर पर्खेपछि ऊ आइपुग्यो। |
| 48 | आइमाई | त्यो आइमाईको आकृति मतिर बढिरहेको थियो। |
| 49 | आउँछ | कहाँबाट आउँछ यो भुइँचालो? |
| 50 | आउँला | भोलिपर्सितिर फेरि आउँला। |
| 51 | आउला | के गरेर यसको स्वभावमा परिवर्तन आउला? |
| 52 | आए | मेरा पुर्खाहरू कहिले र कहाँबाट आए मलाई यकिन थाहा छैन। |
| 53 | आओ | फर्केर जाओ हन्डर खाओ आओ। |
| 54 | आक्रमण | मैले त्यस यमदूतलाई आक्रमण गर्ने पारामा भनें। |
| 55 | आखिर | आखिर त्यो पनि त मिहिनेतकै कमाइ हो! |
| 56 | आगो | हामी अगेनामा दाउरा बालेर आगो तापिरहेका थियौं। |
| 57 | आङ | आफ्नै आङ कन्याएर छारो उडाउनु हुँदैन। |
| 58 | आचार्य | त्यहाँ शिवहरि आचार्य पनि थिए। |
| 59 | आज | आज मेरो सेरोफेरोमा अनौठो कुरो भएको छ। |
| 60 | आत्मा | उनको एक झलक पाइयो भने आत्मा तृप्त हुन्थ्यो। |
| 61 | आदेश | बाले दाजुलाई खानेकुराहरू लिएर जान आदेश दिनुभएछ। |
| 62 | आधारित | यस्ता लोककथाहरू नैतिकताका पाठमा आधारित हुने गर्थे। |
| 63 | आधुनिक | यही गोरेटो नै आज आधुनिक सडक बनेको छ। |
| 64 | आनन्द | शोक न सुर्ता, भोक न भकारी, कति आनन्द! |
| 65 | आन्दोलन | देशमा राणासत्ताविरोधी आन्दोलन तीव्र हुँदै गइरहेको थियो। |
| 66 | आफ्नो | हामीले फेरि आफ्नो भूमि टेक्यौं। |

| | | |
|---|---|---|
| 67 | आमा | हाम्रो परिवारमा हजुरबा, हजुरआमा, आमा र दिदी मात्र थिए। |
| 68 | आम्दानी | उनको आम्दानी पच्चीस सय, तीन हजार पनि पुग्न सक्थ्यो। |
| 69 | आयु | हजुरबा बहत्तर वर्षको पूर्ण आयु बाँचिसक्नुभएको थियो। |
| 70 | आराम | धर्मशालाको एउटा कुनामा आराम गर्न थाल्यौँ। |
| 71 | आलु | हामी दिउँसो खाजा खाने घण्टीमा आलु खान जान्थ्यौँ। |
| 72 | आवश्यक | त्यतिखेर संस्कृत भाषाको शिक्षा लिनु आवश्यक मानिन्थ्यो। |
| 73 | आवाज | त्यो आवाज तल आँगनबाट आइरहेको थियो। |
| 74 | आहार | सन्तुलित आहार र नियमित व्यायाम पनि मबाट हुन सकेको छैन। |
| 75 | इच्छा | कति भए तपाईंको इच्छा पुग्छ? |
| 76 | इज्जत | मेरो इज्जत र सम्मानसाथ प्रशंसा गर्ने मानिसले मलाई यस अवस्थामा देखे भने मेरो के स्थिति होला? |
| 77 | इत्यादि | कोही काठका ठेका, पेरुङ्गो, सोली, कलश इत्यादि खोज्न छरछिमेकमा दगुरे। |
| 78 | इभन | इभन मलाई बाले अङ्ग्रेजी पढाउने जमर्को पनि गर्नुभयो। |
| 79 | इलाम | मुक्तिसेनाले वीरगन्ज, विराटनगर, भैरहवा, धनकुटा, इलाम आदि कब्जा गर्दै ल्यायो। |
| 80 | उकालो | हामी उकालो चढ्न थाल्यौँ। |
| 81 | उखान | मलाई हिन्दीको उखानको सम्झना हुन्थ्यो— 'खट्टा, पीरा, ताता भात, मर्द बिगारे तीनौँ जात।' |
| 82 | उचित | मैले उनको सामु पर्नु उचित थिएन। |
| 83 | उज्यालो | बिहान उज्यालो भैसकेको रहेछ म मुख धुन घाटतिर ओर्लें। |
| 84 | उठे | राणाहरूको थिचोमिचोका विरोधमा देशका युवाहरू उठे। |
| 85 | उठ्दै | म ढुनमुनिँदै, लड्दै, उठ्दै घरतिर दगुर्न थालेँ। |
| 86 | उठ्ने | गुरु छडीले हत्केलामा सुम्ला उठ्ने गरी हिर्काउनुहुन्थ्यो। |
| 87 | उडे | त्रिभुवन कार्तिक पाँच गते भारततर्फ उडे। |
| 88 | उड्दा | घाइते भएको चरो उड्दा खस्यो। |

| | | |
|---|---|---|
| 89 | उदार | पद्मशमशेर अलि उदार खालका राजा थिए। |
| 90 | उनी | उनी हाम्रो परिवारकी एउटी सदस्यजस्तै थिइन्। |
| 91 | उपलब्ध | यहाँ सहरमा पाइने केही सुविधाहरू उपलब्ध थिए। |
| 92 | उमेर | यतिखेर ज्ञानेन्द्रको उमेर तीन वर्षको मात्र थियो। |
| 93 | उम्रे | करेसाबारीमा रोपेका मकै उम्रे। |
| 94 | उल्टो | यस विषयमा मेरो प्रतिक्रिया भने बिलकुलै उल्टो भएको थियो। |
| 95 | उल्लेख | यहाँ मैले उल्लेख गर्न लागेको घटना पनि बडो रोचक छ। |
| 96 | उस्तै | जस्तो करनी उस्तै भरनी!... यो मात्र हो र यसका अरू साथीहरू पनि छन् रे! |
| 97 | उहाँ | उहाँ पचास–पचपन्न वर्षकी हुनुहुन्थ्यो। |
| 98 | ऋण | त्यो ऋण पछि गएर माफी भयो। |
| 99 | एउटा | यो एउटा सामन्ती व्यवस्थाको नमुना थियो। |
| 100 | एक | उहाँ गाउँभरमा एक मात्र सरकारी जागिरे हुनुहुन्थ्यो। |
| 101 | एघार | म त्यतिखेर नौ–दस कि एघार वर्षको हुँदो हुँ। |
| 102 | ऐन | यस परीक्षामा सामान्य गणित, ऐन–स्रेस्ता, नेपाली लेखपढ र औंठा यति विषय रहन्थे। |
| 103 | ओटा | यो किम्बुको रूखमा चारओटा खासखास हाँगा थिए। |
| 104 | ओठ | ऊ राम्री, गोरी, बडेबडे आँखा, पातला राता गुलाफी ओठ, बान्की परेको अनुहार, सलक्क परेको जीउडालकी थिई। |
| 105 | ओर्लेर | पल्लापट्टिको ओरालो ओर्लेर चित्लाङफेदी पुग्नु पनि निकै थियो। |
| 106 | ओसार्ने | मैले उहाँका लागि खानेकुरा ओसार्ने गर्थें। |
| 107 | ओहो | ओहो म त आफ्ना दौँतरी केटाहरूका आँखामा कतिसम्म तल खसिसकेछु! |
| 108 | औँला | उसले हार्मोनियमका पर्दामा औँला चालेको हेरेर मैले पनि सिक्न सकें। |
| 109 | औपचारिक | मैले उठ्ने उपक्रम गर्दै औपचारिक बिदा मागेँ। |
| 110 | कटु | हिजोसम्म म त्यस्ताको कटु आलोचना मात्र होइन, खुलेरै गाली गर्न तम्सन्थेँ। |

| | | |
|---|---|---|
| 111 | कठिन | त्यो निकै कठिन कुरा थियो। |
| 112 | कति | तिनीहरूलाई कति दुख्यो होला? |
| 113 | कथा | यसरी भेलामा कथा भन्नेमा प्रायः मोतीलाल बूढा र मोहनलाल हुन्थे। |
| 114 | कनिका | आकाशबाट शीत बर्सेझैँ हिउँका कनिकाहरू बर्सिरहेका थिए। |
| 115 | कपडा | ऊ भुइँमा एउटा कपडा बिछ्याएर बस्थ्यो। |
| 116 | कमजोरी | उसलाई आफ्नो कमजोरी देखी खेद र ग्लानि भएर आउँछ। |
| 117 | करुणा | प्रस्तुत उपन्यास परोपकार, दया, करुणा आदि विषयलाई समेटेर मर्मस्पर्शी शैलीमा लेखिएको आख्यान थियो। |
| 118 | कर्तव्य | मैले आमाबाबुप्रतिको छोराको कर्तव्य पनि त बिर्सनु हुन्न। |
| 119 | कलम | त्यतिखेर सिँगान पुछ्न नजान्दैदेखि कापी र कलम दिने चलन थिएन। |
| 120 | कलेज | त्यो स्कुल, कलेज, कार्यालयहरूसमेत भएको मझौला सहर थियो। |
| 121 | कल्पना | मैले व्यावसायिक रूपले गायक बन्ने कहिल्यै कल्पना गरिनँ। |
| 122 | कसो | के गरौँ र कसो गरौँ भन्ने छटपटीले मलाई रन्थनाउन थाल्यो। |
| 123 | कहाँ | भागेर कुन ठाउँ, कहाँ जाने? |
| 124 | काँचो | आमाले मलाई आधा काँचो जाउलो पकाएर खुवाउनुभो। |
| 125 | काटेँ | आँखा झिमिक्क पनि नगरी छर्लङ्ग रात काटेँ। |
| 126 | काठको | त्यहाँ एउटा काठको घर थियो। |
| 127 | काठमा | हजुरबाले काठमा काठ घोटेर आगो पार्नुहुन्थ्यो। |
| 128 | कान्छो | त्यहाँ मेरो आफ्नै कान्छो छोरो छ। |
| 129 | काभ्रे | त्यस दिन काभ्रे, नुवाकोट, मकवानपुर, धादिङ आदि ठाउँका तमासेहरूको ओइरो लागेको थियो। |
| 130 | कारणले | यसै कारणले कहिलेकाहीँ हामीमा झगडा पनि हुने गर्थ्यो। |
| 131 | किताप | मलाई यो किताप पढ्न दिनेमा कृष्ण दाइ र रत्न दाइ थिए। |
| 132 | किसिम | एक किसिमले नजरबन्द रूपमा राखेका थिए राणाशासकले उनलाई। |

| | | |
|---|---|---|
| 133 | कुकुर | आफ्नो देशको कुकुर पनि प्रिय हुन्छ। |
| 134 | कुकुर | कुकुर पनि मसँग परिचित भैसकेको थियो। |
| 135 | कुखुरा | ती कुखुरा फुल पार्ने भइसकेका थिए। |
| 136 | कुटेर | पुलिस कुटेर छोरो ठानामा पुग्यो। |
| 137 | केटाकेटी | म केटाकेटी छउन्जेलसम्म पनि यस्तो चलन हटेको थिएन। |
| 138 | क्या | क्या फसाद! |
| 139 | क्रम | सम्झनाको कुनै क्रम हुँदैन इतिहासको जस्तो। |
| 140 | खर्च | पैसा जेजति लाग्छ, म खर्च गर्छु। |
| 141 | खाँचो | त्यतिखेर जग्गाजमिनको कुनै खाँचो थिएन। |
| 142 | खाल्डो | त्यति बेला पृथ्वी के यही काठमाडौं खाल्डो जत्रो थियो? |
| 143 | खास | व्रतबन्धको अगिल्लो दिन केटाकेटीहरूका लागि खास उमङ्गको दिन हुन्छ। |
| 144 | खुट्टा | नआउनु भागेर आइसकेपछि त्यस्तो खुट्टा कमाउनु हुन्छ? |
| 145 | खेत | हाम्रो गोकर्णेश्वरको उत्तरपट्टिको घट्टेकुलो खेत कमाउने मोहीले एक साल बालीकुत बुझाउन सकेन। |
| 146 | खेल्ने | हाम्रा खेलहरूमा पुतलीको बिहा गरी खेल्ने खेल पनि हुन्थ्यो। |
| 147 | खोइ | खोइ त तिम्रो दाहिने गोडाको सुरुवालको बाहुला माथि सार त। |
| 148 | खोकी | त्यति बेला हजुरआमाको खोकी बढ्थ्यो। |
| 149 | खोजे | ती छुसीहरूले मसँग जोरी खोजे। |
| 150 | खोज्छ | उनीहरू भनिरहेका थिए, "बडो पवित्र, शुद्ध र नैतिक बन्न खोज्छ लाछी! |
| 151 | खोज्दै | म अर्को डिब्बाबाट उत्रिएर आफ्नो डिब्बा खोज्दै यसमा चढेको थिएँ। |
| 152 | खोला | पाकाहरूको कानुनमा केटाकेटीले खोला, पोखरीमा पौडी खेल्नु वर्जित थियो। |
| 153 | गएर | त्यो ऋण पछि गएर माफ भयो। |
| 154 | गफ | मेरो भित्री रुचि कुरा, गफ, कल्पनातिर थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 155 | गर्छन् | यस्ता मानिस अत्यन्त निरङ्कुश र अहङ्कारी भएर आफूभन्दा तल्लामाथि शासन गर्छन्। |
| 156 | गर्ला | पछि आफ्नो टाउकोमा पर्दा यसले के गरी निर्वाह गर्ला? |
| 157 | गल्ली | इँटका गल्ली र बारीमा खेल्दैखेल्दै मेरा दिन अगाडि बढ्दै गए। |
| 158 | गहना | घरबाट आमाको गहना चोरेर भागेको छोरो फर्कंदा उसको हैसियत कस्तो होला? |
| 159 | गहूँ | सपाला गहूँ राम्ररी सप्रेको छ। |
| 160 | गाँठो | मेरो दाहिने पाखुरामा गाँठो थियो। |
| 161 | गाइ | जर्सी गाई दूधालु हुन्छ। |
| 162 | गाउँगाउँ | यो स्वर उपत्यकाका गाउँगाउँ, टोलटोलका घरघरमा फैलियो। |
| 163 | गाउँघर | मलाई गाउँघर र टोलछिमेकको सम्झनाले व्याकुल तुल्याउन थालेको थियो। |
| 164 | गाउँतिर | मेरा गोडाले मलाई बारम्बार उसकै गाउँतिर तान्न थाल्थे। |
| 165 | गाउँमा | मेरो घर गाउँमा सबैभन्दा सम्पन्न मानिन्थ्यो। |
| 166 | गाडि | ऊ सरासर मल्लको गाडि लिइर हिँड्यो। |
| 167 | गालि | मभित्र उसको गाली नराम्ररी गडेर बस्यो। |
| 168 | गिता | राम नियमित गीता पाठ गर्छ। |
| 169 | गेडा | एक–दुई गेडा कसार र एक चिम्टी तिलको छोप ल्याएर हाम्रो सामु तेर्स्याइयो। |
| 170 | गोली | त कहाँ जाने अँध्यारामा गोली हान्न? |
| 171 | गौँथली | गौँथली टेलिफोनको तारमा बसेको थियो। |
| 172 | ग्रन्थ | उनीहरूका सामु धार्मिक ग्रन्थ र बगलमा चियाका बट्टुकाहरू देखिन्थे। |
| 173 | घटना | यो पनि एउटा रमाइलै घटना थियो। |
| 174 | घर | मेरो घर गाउँमा सबैभन्दा सम्पन्न र प्रभावशाली मानिन्थ्यो। |
| 175 | घाँस | उहाँ फर्कंदा घाँस नलिई आउनुहुन्नथ्यो। |
| 176 | घाउ | दाहिने पिँडौलामा ठूलो घाउ लागेको थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 177 | घाम | बिहान घाम निकै चढिसकेको थियो। |
| 178 | घिन | ऊ दिनभर घिनलाग्दा ठट्टाहरू उराल्दै बस्थी। |
| 179 | घुँडा | हामीले उनीहरूसँग घुँडा टेक्नुपर्थ्यो। |
| 180 | घुम्न | म सुबेदार बाजेसँग जेल घुम्न जाने गर्थें। |
| 181 | घेरा | मेरो संसार चालिसेगाउँको सीमित घेरा, त्यसैका आसपाससम्म फैलिएको थियो। |
| 182 | घोषणा | उनले आफूलाई "म राष्ट्रको सेवक हूँ" भनेर घोषणा पनि गरेका थिए। |
| 183 | घ्याम्पो | हजारौँ भनेको कति होला? हाम्रो घरका घ्याम्पा जलढुङ्गा भरेर राखेका मकैका गेडाजति? |
| 184 | चटपट | म स्वयम्, यस्ता चटपटे खानेकुरामा र नाचगानजस्ता मनोरञ्जनप्रति निकै लुब्ध थिएँ। |
| 185 | चढेर | उनी च्यान्टा घोडा चढेर हिँड्थे। |
| 186 | चम्किलो | उनी चम्किलो र ओजस्वी व्यक्तित्वका पुरुष थिए। |
| 187 | चम्चा | ज्ञानी पनि चम्चा प्रयोग गर्थ्यो। |
| 188 | चरण | तिनले गुरुको चरण छोए। |
| 189 | चरा | हामी चरा, फूल र मान्छेका टाउकाका चित्र कोर्न थाल्थ्यौँ। |
| 190 | चरो | म घाइते चरो खसेझैँ स्वप्नाकाशबाट धर्तीमा झरेँ। |
| 191 | चल्ती | त्यो पसल बढी चल्ती थियो। |
| 192 | चल्थे | कालीमाटीदेखि थानकोटसम्म एकाध थोत्रा लरी चल्थे। |
| 193 | चस्मा | उनको नाकको डाँडीमा गोलो चस्मा अडिएको थियो। |
| 194 | चाँदी | मेरा हातमा सिङ्गो चाँदीको मोहर थियो। |
| 195 | चार | उहाँ बिहान चार बजे उठेर नुहाउनुहुन्थ्यो। |
| 196 | चाल्नो | उनीहरू बाँसको नाङ्लो, चाल्नो, डालो, डोको बनाउने गर्थे। |
| 197 | चासो | राजकाजका कुरामा दुनियाँले चासो लिनु हुँदैन। |
| 198 | चिँ | रूखका हाँगाबिँगा, बाँसका थानहरू भाँचिँदै, टुट्तै धर्तीमा ढलेका थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 199 | चित्र | त्यसमा मान्छेका चित्र बनाइएका थिए। |
| 200 | चिबे | मलाई मजा लाग्ने दृश्यचाहिँ बिजुली र टेलिफोनका तारहरूमा चिबेचराका झालेपोथीको दृश्य नै थियो। |
| 201 | चेप्टो | उहाँको अनुहार इँटको भुइँमा बजि्रएर चेप्टो भएको थियो। |
| 202 | चोक | आजको चाबहिल चोकको पश्चिमी पार्श्वमा एउटा चौतारो थियो। |
| 203 | चोखो | उनीहरू सबै हाम्रै भान्छामा खाने गर्थे; तलब चोखो बचाउँथे। |
| 204 | च्याउ | च्याउ खेतीको द्रूत गतिमा विकास भयो। |
| 205 | छँदै | आज पनि त्यो घर भग्न रूपमा छँदै छ। |
| 206 | छानबिन | त्यतिखेरसम्म दूर्घटनाको छानबिन गर्ने परिपाटी त्यति साह्रो वैज्ञानिक र कानुनी भैसकेको थिएन। |
| 207 | छाप | पशुपतिको मूल ढोकामा टीका, छाप बेच्ने बाजेको पसलमा हामीलाई खूबै रमाइलो लाग्थ्यो। |
| 208 | छाप्रा | त्यहाँ असङ्ख्य गरिबका छाप्रा थिए। |
| 209 | छुट | हरेक बट्टामा चार रुपियाँ छुट छ। |
| 210 | छेउ | भीड बिस्तारै छेउ लाग्दै गयो। |
| 211 | छोए | हाम्रा यात्रुहरूले हिउँ छोए। |
| 212 | छोडिनँ | मैले आफ्नो अठोट छोडिनँ। |
| 213 | छोडेँ | सदाका लागि चाबहिलको वासस्थान छोडेँ। |
| 214 | छोपे | तिनले आफ्नो सामान कागतका पाताले छोपे। |
| 215 | छोरी | उनी मेरा बाकी ठूली आमाकी छोरी थिइन्। |
| 216 | छौ | तिमीले त्यस्तो घडी देख्या छौ? |
| 217 | छ्या | छ्या! के गरेको त्यस्तो। |
| 218 | जगेर्ना | शिरमाथि एउटा छत र दुई छाक खान दुई मूठी अन्नको जगेर्ना हून सके हूने थियो। |
| 219 | जग्गा | त्यतिखेर त्यो एउटा पर्ती जग्गा थियो। |
| 220 | जटिल | त्यतिखेरको जटिल समस्या अहिले म सम्झन्छु। |

| | | |
|---|---|---|
| 221 | जनकपुर | यिनी जनकपुरतिर जान लागेका थिए। |
| 222 | जनावर | घरबाहिर परेका जनावर र बूढाखाडा मानवको बिल्लिबाठ थियो। |
| 223 | जन्माउन | त्यस घटनाको पृष्ठभूमि र पात्रघटनाको आधारमा एउटा कथा जन्माउन पुगेँ। |
| 224 | जब | जब मैले जीवन सुरु गरेँ तब यहाँका जीव र वस्तुहरूबारे बुझ्न सुरु गरेँ। |
| 225 | जाँच | त्यहाँ घाउ जाँच गराउन आउने झगडियाहरू थिए। |
| 226 | जाओस् | चाहे जोसुकै हाकिम भएर त्यहाँ जाओस् त्यसको पहिलो स्वागतमा सबैभन्दा अगाडि ऊ नै हुने गर्थ्यो। |
| 227 | जागिर | त्यसरी जागिर खाएर कुलको रीति थाम्नु अनिवार्य थियो। |
| 228 | जाडो | जाडो महिना भएकाले गाईबस्तु बारीका पाटामा सारिएका थिए। |
| 229 | जिउ | मभित्र एउटा तीव्र भयको भावनालाई जिउँताइरह्यो। |
| 230 | जिप | त्यतिखेर आजजस्तो बस, जिप, मोटरजस्ता सवारीसाधन थिएनन्। |
| 231 | जिब्रो | त्यस्ता कुरा गरिहिँड्नेको जिब्रो थुतिन्छ। |
| 232 | जीवन | उनी एउटा प्रवासी जीवन बिताइरहेका थिए। |
| 233 | जुम्रा | त्यतिखेर केही जुम्राहरूले कुस्त सम्पत्ति जोडे रे। |
| 234 | जेठा | जेठा दाइ र माइला दाइ घरव्यवहारमा थिए। |
| 235 | जेठो | यो केटो महाकविको जेठो छोरो थियो। |
| 236 | जोडजाड | मैले यस्ता कतिओटा भित्तेघडी खोलखाल, फोरफार र जोडजाड गरेर सत्यानाश पारेको छु। |
| 237 | जोड्ने | यो बाटो हिमाञ्चल प्रदेशलाई मैदानसँग जोड्ने मुख्य बाटो थियो। |
| 238 | ज्ञान | सामान्य तालसुरको ज्ञान उहाँलाई थियो। |
| 239 | ज्यान | हामीलाई अब ज्यान बचाउन पनि धौ पर्‍यो। |
| 240 | झर्न | हामी दक्षिणतिरको ओरालो झर्न थाल्यौँ। |
| 241 | झिकेर | उनले एउटा चुरोट झिकेर सल्काए। |
| 242 | झुन्डिए | सबैजना ठूलो छातामा झुन्डिए। |

| | | |
|---|---|---|
| 243 | झोला | रासनको झोला भुइँमा लत्रेको रहेछ। |
| 244 | झ्याल | झ्याल, बार्दली, कौसीमा चरोमुसो देखिँदैनथ्यो। |
| 245 | टक | रत्न लट्ठिएका आँखाले मेरो मुखमा एक टक हेर्थी। |
| 246 | टाँसे | मानिसहरूले त्यही प्वालमा आँखा टाँसे। |
| 247 | टाउको | म चराको टाउको र मान्छेको आकृति कोर्न थाल्थेँ। |
| 248 | टाढा | जे.पी. स्कुल पनि मेरा लागि ज्यादै टाढा थियो। |
| 249 | टिकट | टिकट त पहिले नै किनिएको थियो। |
| 250 | टुक्रा | धरहरा त तीन टुक्रा भएको छ रे! |
| 251 | टुप्पी | उनीहरूको टुप्पी थियो। |
| 252 | टुप्पो | तीखो बाणको टुप्पो पिँडौलाको मासुमा गएर धसियो। |
| 253 | टेलिफोन | त्यतिखेर हाम्रो मुलुकमा घरघरमा टेलिफोन थिएन। |
| 254 | टोपी | हेर्नोस् न यसले मेरो टोपी फालिदियो। |
| 255 | ट्रक | सिंहदरबारतिरबाट दुई–तीन ट्रक पुलिस आए। |
| 256 | ठट्टा | ऊ दिउँसभरि गोठाले ठट्टा गर्दै बस्यो। |
| 257 | ठाउँ | यहाँ लोकलाजलाई कुनै ठाउँ थिएन। |
| 258 | ठाउँका | त्यसै ठाउँका जनताले खाने–बस्ने प्रबन्ध मिलाउनुपर्थ्यो। |
| 259 | ठाउँठाउँमा | ठाउँठाउँमा कोणसभा, आमसभा, जुलुस, भाषण हुन थाले। |
| 260 | ठाउँबाट | मलाई यस ठाउँबाट सारे। |
| 261 | ठाडो | म कसरी शिर ठाडो पारेर उभिन सकुँला? |
| 262 | ठान्छु | म प्रेम र वासनालाई फरक ठान्छु। |
| 263 | ठिक | म त ठिक कुरा गर्थें। |
| 264 | ठेक्का | हजुरबाले मलाई खाजा ठेक्का लगाइदिनुभएको थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 265 | ठेगाना | मैले कलकत्ताको एउटा ठेगाना लिएको थिएँ। |
| 266 | ठोकेर | ऊ त्यहाँबाट सुइँकुच्चा ठोकेर भाग्यो। |
| 267 | डर | यसको कारण हजुरबाको डर पनि हुन सक्थ्यो। |
| 268 | डाँडो | मेरा पुर्खाले एउटा सिङ्गै डाँडो आबाद गरे। |
| 269 | डाक्टर | पछि गएर तिमीहरूले डाक्टर बन्नुपर्छ। |
| 270 | डुब्दै | म कल्पनाको सागरमा डुब्दै उत्रँदै गएँ। |
| 271 | डेढ | राति डेढ बजेतिर नाटक सकियो। |
| 272 | डेरा | उहाँ भीमसेनस्थाननजिकै डेरा लिएर बस्नुभयो। |
| 273 | डोरी | डोरी पनि चुँडिएन; पिँजरा पनि खसेन। |
| 274 | ढङ्ग | मेरो अर्को काम गर्ने ढङ्ग छैन। |
| 275 | ढाँचा | ढाँचा त त्यस्तै हो। |
| 276 | ढाके | उनले गलबन्दीले नाक, मुख, कान ढाके। |
| 277 | ढिँडो | हाम्रो सामान्य खाना ढिँडो र गुन्द्रुक हो। |
| 278 | ढोका | पाटीको ढोका बन्द गरिएको थियो। |
| 279 | त | अनि मौका मिल्यो कि त उम्केर भाग्थेँ। |
| 280 | तँ | लौ, तँ भइस् भनेपछि भइस् जा। |
| 281 | तत्काल | तत्काल आफूलाई समालेर झूट बोलेँ। |
| 282 | तर्फ | ठूलीआमाका तर्फ छोराछोरी थिएनन्। |
| 283 | तल | सबै तल सडकमा झर्थ्यौँ। |
| 284 | तस्बिर | मेरा आँखासामु घरको तस्बिर नाच्न थाल्यो। |
| 285 | तह | मेरो डिब्बाका यात्रीहरू आफ्ना झिटीगुन्टा तह लाउँदै थिए। |
| 286 | तामाङ | मलाई दुई तामाङ दाजुबहिनीको सम्झना आउँछ। |

| | | |
|---|---|---|
| 287 | तीन | चालिसेका तीन भाइ छोरा बसाइँ गरे। |
| 288 | तुलना | आफ्नो देश र पराई देशका बीच तुलना हुनै सक्तैन। |
| 289 | तुलसी | उनी तुलसी गिरीकै नाता पर्ने थिए। |
| 290 | तेइस | बिहा भएको तेइस वर्षको अवधिमा मेरा दसओटा सन्तान भए। |
| 291 | तेस्रो | त्यतिखेर रातको तेस्रो प्रहर बितेको थियो। |
| 292 | तोरी | व्रतबन्धको दिन दिदीले भाइलाई तोरीको बुकुवा लगाएर नुहाइदिनुपर्छ। |
| 293 | त्यो | त्यो चाहिँ अज्ञात छ। |
| 294 | थप | अर्को थप कुरा त्यसको कथा अति रोचक थियो। |
| 295 | थापा | एक दिन बद्री, ठूले थापा र अरू साथीहरूसँग खेलिरहेको थिएँ। |
| 296 | थापेर | उनीहरू नाङ्लोपसल थापेर जीविका गर्थे। |
| 297 | थिएँ | म सुरुदेखि नै उपद्रयाहा खालको थिएँ। |
| 298 | थिएनन् | यिनीहरूका सन्तान थिएनन्। |
| 299 | थुप्रै | आज अपत्यारिला लाग्ने 'सत्य' त्यति बेला थुप्रै थिए। |
| 300 | थोप्ला | बान्की परेका आँखा र चिउँडोमा नीलो थोप्ला उसका आकर्षण थिए। |
| 301 | थोरै | बजारका घरहरूमा थोरै मात्र पक्की थिए। |
| 302 | दङ्ग | साहू दङ्ग पर्थ्यो। |
| 303 | दसैँ | ऊ दसैँ सकेर लोग्नेको घर गैसकी। |
| 304 | दही | लटक्क परेको दही तराईको विशेषता नै हो। |
| 305 | दाँत | त्यो त केवल हात्तीको देखाउने दाँत मात्र थियो। |
| 306 | दाउरा | हामी दाउरा बालेर आगो तापिरहेका थियौँ। |
| 307 | दाजु | उनका माइला दाजु त्यहाँ पढ्ने गर्थे। |
| 308 | दाना | ती सात दाना अक्षता चामलका सग्ला दाना थिए। |

| | | |
|---|---|---|
| 309 | दायाँबायाँ | बाटाका दायाँबायाँ ढड्डी र नीलकाँडाका झाडीहरू थिए। |
| 310 | दिई | दिई भने त समस्या भएन। |
| 311 | दिउँसो | उहाँ दिउँसो एक बजे फर्कनुहुन्थ्यो। |
| 312 | दिऊँ | अब तपाईँका झिटीगुन्टा दिऊँ? |
| 313 | दिएँ | मैले मनमनै ईश्वरलाई धन्यवाद दिएँ। |
| 314 | दिनुहोस् | मेरो पत्रिकालाई एउटा कथा दिनुहोस् न। |
| 315 | दीर्घ | नेपालीमा ह्रस्व र दीर्घ छुट्याउनु पर्दैन। |
| 316 | दुइटा | त्यो होटेलमा बस्नुका दुईटा कारण थिए। |
| 317 | दुई | त्यस परिवारमा दुई भाइ छोरा थिए। |
| 318 | दुब्लो | ऊ औसतभन्दा पनि दुब्लो थियो। |
| 319 | दृष्टिकोण | मेरो दृष्टिकोणमा धेरै नै परिवर्तन आइसकेको थियो। |
| 320 | देखाउँदै | उसले आफ्नो खस्रो स्वभाव देखाउँदै त्यस जवानको सातो खायो। |
| 321 | देखिँदैन | त्यहाँ बाहिर कोही देखिँदैन। |
| 322 | देख्यो | उसले मलाई देख्यो। |
| 323 | देवकोटा | लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा भन्ने एक जना कवि छन् रे। |
| 324 | देशभित्र | देशभित्र आन्दोलन बढ्दै गयो। |
| 325 | धमिलो | एक जना गुरुको धमिलो सम्झना आउँछ। |
| 326 | धागो | व्रतबन्ध नभएसम्म केटीको जस्तै चुल्ठो बाटिन्थ्यो। |
| 327 | धेरै | ऊ मेरो डरले धेरै दिनसम्म खेल्न आएन। |
| 328 | धोएर | उठेर मुखसुख धोएर बाहिर निस्कियौँ। |
| 329 | धोती | मैले त्यतिखेर धोती लाएको थिएँ। |
| 330 | ध्यान | बा हामीतिर त्यति ध्यान दिनुहुन्नथ्यो। |

| | | |
|---|---|---|
| 331 | नजिक | त्यो बिहारी पनि मेरो नजिकै आएर बस्यो। |
| 332 | नपरोस् | हामीले जस्तो पछि आएर तिमीले पछुताउनु नपरोस्। |
| 333 | नयाँ | हामीले एउटा नयाँ खेलको आविष्कार गरेका थियौँ। |
| 334 | नष्ट | त्यहाँको सुन्दर माछापोखरी, बगैँचा सब नष्ट भए। |
| 335 | नहुनु | यो पनि हुन्छ, किन नहुनु त? |
| 336 | नाग | त्यहाँ विभिन्न किसिमका नाग थिए। |
| 337 | नाघे | कर्मचारीले त्यो तगारो नाघे। |
| 338 | नाङ्लो | उनीहरू बाँसको नाङ्लो, चाल्नो, डालो, डोको बनाउने कालिगढ थिए। |
| 339 | नाफा | भक्तबहादुर धेरै नाफा लिन्थे। |
| 340 | निम्ति | कतिपय त मुद्दाको पुर्पच्छेका निम्ति थुनिएका हुन्थे। |
| 341 | नियम | यो त सृष्टिको नियम हो। |
| 342 | निर्णय | यो मामाको निर्णय थियो। |
| 343 | निर्धारित | त्यहाँ कुनै निर्धारित पाठ्यक्रम थिएन। |
| 344 | निर्माण | जताततै नयाँ बस्तीको निर्माण सुरु भयो। |
| 345 | निश्चित | मलाई निश्चित हेक्का छैन। |
| 346 | निस्किए | चराचुरुङ्गीहरू आफ्नाआफ्ना गुँडबाट निस्किए। |
| 347 | नुहाइधुवाइ | मलाई दिदीले पँधेरामा लगेर नुहाइधुवाइ गराइन्। |
| 348 | नुहाउन | हामी किनारामा लुगा फुकालेर नुहाउन थाल्यौँ। |
| 349 | नेपाल | यतिखेर भारतीयहरूलाई पनि नेपाल छिर्ने अनुमति हुन्थ्यो। |
| 350 | नेपाली | नेपाली केटाहरूलाई अस्थायी आश्रय दिँदा रहेछन् उनी। |
| 351 | नोकरी | उनीहरू त्यो नोकरी मन नपरे त्यसलाई छोड्न सक्छन्। |
| 352 | पचपन्न | उहाँ पचपन्न वर्षकी हुनुहुन्थ्यो। |

| | | |
|---|---|---|
| 353 | पछाडि | एक पटक त पछाडि फर्केर भाग्ने विचार पनि उठ्यो। |
| 354 | पछि | पछि तिनैका एक भाइ यज्ञडोल डाँडामा आए। |
| 355 | पछुतो | मलाई कुनै पछुतो छैन। |
| 356 | पढें | मैले त्यो कागत पढें। |
| 357 | पढ्दा | त्यो उपन्यास पढ्दा मलाई खाने र सुत्नेसम्म पनि सुद्धी हुँदैनथ्यो। |
| 358 | पढ्न | म ६ महिनामा नै सानातिना सामग्री पढ्न सक्ने भएँ। |
| 359 | पनि | यसलाई जहाँबाट सुरु गरे पनि हुन्छ। |
| 360 | पर | अलि पर नारन र कान्छो पनि थिए। |
| 361 | परम्परा | मैले पनि अरूले झैं परम्परा निर्वाह गर्नु थियो। |
| 362 | परिवर्तन | के गरेर यसको स्वभावमा परिवर्तन आउला? |
| 363 | परिस्थिति | पेटले मागेपछि समय, परिस्थिति, ठाउँ केही हेर्दैन। |
| 364 | परेवा | दिदीले परेवा उडाउनुहुथ्यो। |
| 365 | पर्खाल | मोतीलालको पर्खाल मेरो घरको पश्चिममा छ। |
| 366 | पाँच | त्यति बेला म पाँच वर्षको थिएँ। |
| 367 | पाउडर | उनी दिदीलाई पाउडर, क्रिम, किलिपकाँटाहरू दिएर रिझाउन सक्थिन्। |
| 368 | पाठक | म त्यति महत्त्वपूर्ण पाठक होइन। |
| 369 | पाठशाला | त्यो पाठशाला पनि विचित्रको थियो। |
| 370 | पाठ्यपुस्तक | त्यहाँ कुनै निर्धारित पाठ्यक्रम र पाठ्यपुस्तक थिएन। |
| 371 | पार्टी | काङ्ग्रेस पार्टी सत्तामा आउनासाथ उसलाई फ्याँकिदियो। |
| 372 | पार्नु | तिमीले आफ्नो शरीरलाई अपवित्र पार्नु राम्रो हुन्न। |
| 373 | पास | यस क्रममा पास भएको नाच प्रदर्शन हुन्थ्यो। |
| 374 | पिउन | कान्छो त्यहाँ पिउन थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 375 | पुगेँ | म बजारिया केटाहरूको सङ्गतमा पुगेँ। |
| 376 | पुगेन | घण्टौँ बितेर गयो, खैखबर गर्न कोही पुगेन। |
| 377 | पुग्छ | कति भए तपाईंको इच्छा पुग्छ? |
| 378 | पुग्यौँ | हामी पनि झुन्डिएरै पारि पुग्यौँ। |
| 379 | पूर्व | उहाँ कोठाको पूर्व खण्डमा बस्नुहुन्थ्यो। |
| 380 | पेट | खाली पेट रात गुजार्नुबाहेक अर्को विकल्प रहेन। |
| 381 | पैसा | मैले पनि केही पैसा त लिएरै हिँड्नुपर्छ। |
| 382 | पोले | यी दुईले जीविका चलाउन मुर्दा पोले। |
| 383 | पोल्ने | उसका चितुवाका जस्ता पोल्ने आँखाले मेरो मुटु काम्न थाल्यो। |
| 384 | प्रचलित | केटाको वेशभूषा त्यतिखेर प्रचलित अत्याधुनिक र उम्दा खालको थियो। |
| 385 | प्रतिष्ठा | के होला मैले आजसम्म आर्जन गरेको सामाजिक प्रतिष्ठाको? |
| 386 | प्रबन्ध | त्यसपछि सवारीको प्रबन्ध गर्नुपर्‍यो। |
| 387 | प्रभु | पास त पासै छ प्रभु सेकेन्ड डिभिजनमा। |
| 388 | प्रयत्न | पाकाहरू पराल बालेर हाम्रो जाडो भगाउने प्रयत्न गर्थे। |
| 389 | प्रयोग | उहाँ मलाई रोक्नुपर्‍यो भने त्यही हतियार प्रयोग गर्नुहुन्थ्यो। |
| 390 | प्रवचन | मैले दार्शनिक प्रवचन दिन थालेँ। |
| 391 | प्रस्तुत | प्रस्तुत घटना दुई हजारतिरको हो। |
| 392 | प्रारम्भिक | मैले बङ्गालीका प्रारम्भिक पुस्तकहरू पढ्न थालेँ। |
| 393 | प्वाल | सडकमा ठूलो प्वाल थियो। |
| 394 | फल | मसँग एउटा लामो फल गरेको चक्कु थियो। |
| 395 | फलाना | फलानो त फलाना जर्साबको आफ्नै मान्छे। |
| 396 | फाइदा | मबाट गलत मानिसले पनि फाइदा उठायो होला। |

| | | |
|---|---|---|
| 397 | फाटे | त्यस रूखमा धेरै हाँगा फाटे। |
| 398 | फारसी | प्रस्तुत उपन्यास फारसी शैलीमा लेखिएको आख्यान थियो। |
| 399 | फिट | इँटका चार–पाँच फिट अग्ला चाङ थिए। |
| 400 | फुपू | मलाई साथीहरू फुपू भनेर जिस्क्याउन थाले। |
| 401 | फुल | ऊ गुरुका लागि कुखुराको फुल खोजेर ल्याइदिने गर्थ्यो। |
| 402 | फेरि | हामी हाँस्दै फेरि अरू साथीहरूका माझमा पुग्थ्यौँ। |
| 403 | फोटो | मलाई देवीदेवताको फोटो प्रिय हुने गर्थ्यो। |
| 404 | बँधुवा | यस्ता नोकरचाकरलाई बँधुवा नोकर भन्थे। |
| 405 | बगैँचा | त्यहाँको सुन्दर माछापोखरी, फलफूलका बगैँचा सब विनष्ट भए। |
| 406 | बच्चा | त्यो अचम्मको बच्चा पुस्तक पढ्दै थियो। |
| 407 | बजार | एक दिन मामा मलाई लिएर बजार जानुभयो। |
| 408 | बसे | यिनै चालिसेका एक हाँगा सिन्धुपाल्चोकमा बसे। |
| 409 | बस्दा | यसरी बस्दा दिन सजिलै बित्थे। |
| 410 | बस्न | त्यो घटना मेरो बालमनमा गहिरोसँग बस्न गएको थियो। |
| 411 | बाँकी | मेरो ईर्ष्या गर्नेहरूले मेरो बदनाम गर्न कुनै कसर बाँकी राखेनन्। |
| 412 | बाँडेर | टुँडिखेललाई दुई खण्डमा बाँडेर बीच छातीमा सडक बनाइयो। |
| 413 | बाक्लो | एकातिर नीलकाँडाको बाक्लो बार थियो भने अर्कोतिर कान्लो। |
| 414 | बारवा | हामी बास भेट्न बारवा कुदेझैँ कुद्यौँ। |
| 415 | बाङ्गो | अँगेरी प्राय बाङ्गो नै हुन्छ। |
| 416 | बाजा | म तबला, बाँसुरी, सितार आदि बाजा बजाउन सक्छु। |
| 417 | बाफ | चियाको कितलीबाट बाफ छुटिरहेको देखिन्थ्यो। |
| 418 | बाबा | यसै सेतो सत्तलमा एक बाबा बस्ने गर्थे। |

| | | |
|---|---|---|
| 419 | बाबु | गुरु र बाबु दुवैलाई समान मर्यादा राख्नुपर्छ। |
| 420 | बारी | यो बारी बेचेबापत साहूले कति लियो? |
| 421 | बालक | राजा ज्ञानेन्द्र तीन वर्षका बालक थिए। |
| 422 | बाहिर | बाहिर हेर त! |
| 423 | बाहेक | यीभन्दा बाहेक अरू घरहरू कच्ची छानावाला थिए। |
| 424 | बाह्र | हामी बाह्र वर्षका थियौँ। |
| 425 | बिजुली | मेरो गाउँमा बिजुली, बाटो, धाराजस्ता सुविधा थिए। |
| 426 | बिरालो | दूधको साछी बिरालो! |
| 427 | बिर्सेर | उहाँ आफ्नो दुर्दिनलाई बिर्सेर जीवनको लडाइँ लड्नुहुन्थ्यो। |
| 428 | बीच | यो केटालाई साथीभाइका बीच कालु भनिन्थ्यो। |
| 429 | बुझाउँछ | ऊ तिनीहरूको राम्रो चरित्र र उन्नति हेरेर चित्त बुझाउँछ। |
| 430 | बुझाउन | मोहीले एक साल कुत बुझाउन सकेन। |
| 431 | बुझिन | उसले यो गीत बुझिन। |
| 432 | बुझे | जनताले त्यो कुरा छर्लङ्ग बुझे। |
| 433 | बुझ्दा | पछि बुझ्दा यो कुरा थाहा भयो। |
| 434 | बुझ्नु | जेलमा गएर कैदीहरूको बारेमा बुझ्नु मलाई रुचिकर लाग्न थाल्यो। |
| 435 | बृहत् | उनीहरूले आफ्ना सेवकहरूको एउटा बृहत् भारदारीसभा बोलाए। |
| 436 | बेचबिखन | कुनै लागूपदार्थको बेचबिखन र राष्ट्रद्रोहको अपराधमा जकडिएका हुन्थे। |
| 437 | बोक्ने | एक जना त जङ्गबहादुरको हतियार बोक्ने सहायक पनि बनेका थिए। |
| 438 | बोलचाल | म उससँग बोलचाल गर्ने आँट गर्दिनथेँ। |
| 439 | बोली | मैले उसको बोली अडकल गरेँ। |
| 440 | बोल्दा | मेरो बोल्दा छाती दुख्छ। |

| | | |
|---|---|---|
| 441 | भएछ | उनीहरूबाट कुनै भूल भएछ क्यार। |
| 442 | भटमास | कहिले घिउखट्टे, कहिले भटमास बनाएको हुन्थ्यो। |
| 443 | भतिजो | मूल भट्टको भतिजो अलि शान्त र भद्र स्वभावको थियो। |
| 444 | भतेर | ऊ त्यहाँका विलासीहरूकी साझा भतेर थिई। |
| 445 | भनूँ | अब म कोसँग भनूँ? |
| 446 | भन्थे | यस्ता नोकरचाकरलाई बाँधा भन्थे। |
| 447 | भन्न् | यिनीहरूको निजी भन्न् केही पनि थिएन। |
| 448 | भाँडो | उसले आजसम्म यस्तो चमत्कारी भाँडो देखेको थिएन। |
| 449 | भाइहरू | त्यस दिनदेखि भाइहरू सबैलाई चुलै निम्ता गरियो। |
| 450 | भाउजू | मेरी भाउजू निकै राम्रीमा गनिएकी केटी थिइन्। |
| 451 | भागको | म चाबहिल चोकको पूर्वी भागको खरीको बोटतिर लागेँ। |
| 452 | भागतिर | हामी दार्चुलाको भित्री भागतिर प्रवेश गर्दै गयौँ। |
| 453 | भार | उहाँको सेवाटहलको सम्पूर्ण भार कान्छी भाउजूले उठाउँथी। |
| 454 | भित्रै | मैले आफ्नो डरलाई भित्रै दबाएँ। |
| 455 | भुइँ | पानको रातो थुकले भुइँ रङ्गाउनेहरू असभ्य लाग्थे। |
| 456 | भुस | मेरो आँखामा भुस परेजस्तो छ। |
| 457 | भूमि | हामीले फेरि आफ्नो भूमि टेक्यौँ। |
| 458 | भेटघाट | ऊ घरमा गएर जहान–छोराछोरीसँग भेटघाट गर्न सक्थ्यो। |
| 459 | भेटेँ | उसलाई मैले कतै भेटेँ भने पनि चिन्न सक्तिनँ। |
| 460 | भेडा | राणाहरूले रैतीदुनियाँलाई भेडा बनाएका रहेछन्। |
| 461 | भेला | मेरो घरको मकै सऱ्याउने काममा गाउँका प्रायः किशोरकिशोरी र अधबैँसे, नारीपुरुष पनि भेला हुने गर्थे। |
| 462 | भेला | गाउँका प्रायः सबै भेला हुन्छन्। |

| | | |
|---|---|---|
| 463 | भो | भोक लाग्यो, गुरु! |
| 464 | भो | ए, सवारी भो, सवारी! |
| 465 | भोगटे | भोगटे भकुन्डो खेल्न प्रयोग गरिन्थ्यो। |
| 466 | भोजन | त्यहाँ हामीले भोजन, दक्षिणा र वस्त्र आर्जन गर्‍यौँ। |
| 467 | भोजपुरी | मलाई भोजपुरी भाषा बोल्न आउँदैन। |
| 468 | भ्याए | उनले ऊनी काम्लाले लाज मात्र ढाक्न भ्याए। |
| 469 | भ्रम | त्यो मेरो भ्रम मात्र थियो। |
| 470 | म | म सुरुदेखि नै उपद्र्याहा थिएँ। |
| 471 | मङ्गलबार | ऊ मङ्गलबार चाबहिल जान्छे रे। |
| 472 | मतलब | उसले आफ्नो मतलब सकिएपछि सबै कबोल बिर्सियो। |
| 473 | मधुरो | लालटिनले मधुरो उज्यालो तुल्याइरहेको थियो। |
| 474 | मर्म | उहाँ अरूको मर्म बुझ्नुहुन्थ्यो। |
| 475 | मलजल | मेरो हठमा यी कुराहरूले मलजल गर्थे। |
| 476 | मल्ल | म मल्ल बाबुसाहेबसँग घुम्न जान्थेँ। |
| 477 | मसला | म मसला बढी भएको चटपटे खाना रुचाउँछु। |
| 478 | माघ | त्यो माघ महिना थियो। |
| 479 | माछा | मलाई माछा साह्रै मन पर्छ। |
| 480 | माझमा | हामी हाँस्दै साथीहरूका माझमा पुग्थ्यौँ। |
| 481 | मात्रा | उसको व्यक्तित्वभित्र स्वाभिमानको पनि केही मात्रा थियो। |
| 482 | माथि | चाबहिलमा 'माथि र तल'को क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धात्मक भावना थियो। |
| 483 | मान्छे | तिमी पढे–लेखेका मान्छे हौ। |
| 484 | मारे | राजकुमारले त्यहाँको मायावी राक्षसलाई मारे। |

| | | |
|---|---|---|
| 485 | मार्फत | मार्फत पठाउने होइन आफै ल्याइदेऊ। |
| 486 | मालसामान | यिनले घरका मालसामान चोरेर बजारमा बेच्थे। |
| 487 | मिचे | तिनले मेरो इच्छालाई मिचे र आफ्नो काम पूरा गरे। |
| 488 | मिलाए | कदममा कदम मिलाए जीवनको बाटोमा अगाडि बढ्न सकिन्छ। |
| 489 | मिल्छ | जागिरजस्तो कुरो, भन्नासाथ त कहाँ मिल्छ र! |
| 490 | मिल्यो | मैले जान्दाजान्दै यो दरबार माटोमा मिल्यो। |
| 491 | मुछेर | आलुदमको लेदोमा दालमोठ मुछेर खान बडा मजा हुन्छ। |
| 492 | मुलुकभित्र | त्यतिखेर मुलुकभित्र पर्ने तराईका ठाउँहरूमा जान पनि राहदानी बनाउनुपर्थ्यो। |
| 493 | मेरो | मेरो घर सम्पन्न र प्रभावशाली मानिन्थ्यो। |
| 494 | मोटो | मैले नीलकाँडाको मोटो लट्ठी भाँचेर ल्याएँ। |
| 495 | यिनीहरूको | हेर है, यिनीहरूको सङ्गतमा नपर्नू। |
| 496 | युग | यो युग पैसाको युग हो। |
| 497 | योजना | तिनीहरू सामाजिक सुधारका योजना सञ्चालन गर्थे। |
| 498 | रहँदैन | यी कुनै कुराको हेक्का रहँदैन उसलाई। |
| 499 | रहर | तिमीलाई ब्राह्मण कहलाउन कत्रो रहर! |
| 500 | रहे | लक्ष्मी र सेती गाई हाम्रो गोठमा धेरैसम्म रहे। |
| 501 | रह्यो | हाम्रो कलकत्तासम्मको यात्रा निकै त्रासपूर्ण रह्यो। |
| 502 | राँगा | यस खेलमा जाँडरक्सी खुवाइएका बराँठ राँगा जुधाइन्थ्यो। |
| 503 | राखेँ | मैले आफ्नो बाकस उसकै गुन्टामाथि राखेँ। |
| 504 | राख्थे | धनीहरूले नगद गाग्रीमा भरेर गाडेर राख्थे। |
| 505 | राख्नु | उनीहरूमाथि पारिवारिक स्नेह र ममता राख्नु मेरो कर्तव्य हो। |
| 506 | राजनीति | मैले राजनीति, अर्थनीति, समाजनीतिजस्ता विषय पढेँ। |

| | | |
|---|---|---|
| 507 | राजमार्ग | त्यतिखेर पूर्वपश्चिम राजमार्ग बनेको थिएन। |
| 508 | राजा | अन्धाको देशमा कानो राजा। |
| 509 | रायो | त्यो मौसममा रायो पाइने सम्भावना थिएन। |
| 510 | रुपियाँ | बाको मासिक तलब सत्र रुपियाँ मात्र थियो। |
| 511 | रूख | यसमा एउटा ठूलो खरीको रूख थियो। |
| 512 | रूखमा | सहरका रूखमा पनि राणाविरोधी पोस्टर टाँसिन थाले। |
| 513 | रूखा | हाम्रो यात्राले रूखा धर्तीको बाटो लियो। |
| 514 | रूप | मेरो उग्र रूप देखेर ऊ भाग्यो। |
| 515 | रूपबाट | मानसिक रूपबाट पनि उहाँलाई नराम्रो धक्का लाग्नेछ। |
| 516 | रूपमा | मालिकले कानुनी रूपमा उनीहरूलाई दण्डित गर्न सक्थ्यो। |
| 517 | रेग्मी | तिनमा प्रमुख कमलराज रेग्मी थिए। |
| 518 | रेडियो | म एक दिन नेपाल रेडियो पुगें। |
| 519 | रोग | उहाँलाई दमको रोग थियो। |
| 520 | रोगी | उहाँ दमको रोगी हुनुहुन्थ्यो। |
| 521 | लगाइए | ती इँटका चार–पाँच फिट अग्ला दोहरा चाङ लगाइए। |
| 522 | लगाउनु | एक–दुई चिलिम गाँजाको दम लगाउनु उहाँको लागि सामान्य कुरा थियो। |
| 523 | लागू | मेरा सम्बन्धमा पनि यही कुरा लागू भएको छ। |
| 524 | लागे | यो आजको सन्दर्भमा अपत्यारिलो लागे पनि त्यति बेला सत्य थियो। |
| 525 | लाग्थे | यी हाम्रो परिवारकै एक अङ्गझैं लाग्थे। |
| 526 | लाज | छ्या! कति लाज मर्नु कुरो! |
| 527 | लामो | बाले सन्तोषको लामो सास फेर्नुभयो। |
| 528 | लाहुर | सानुभाइले 'लाहुर गए पनि त हुन्छ नि' भन्यो। |

| | | |
|---|---|---|
| 529 | लिँदै | आन्दोलनले फराकिलो आकार लिँदै गएको थियो। |
| 530 | लुगा | दसैँमा नयाँ लुगा लाउन पाइन्छ। |
| 531 | लेखक | मैले त्यसका लेखक र प्रकाशकका बारेमा जान्न सकिनँ। |
| 532 | लेखा | त्यसको लेखा मैले राखिनँ। |
| 533 | लेखे | यसैलाई लक्ष्य गरेर श्यामजीले 'बहिनीलाई चिठी' लेखे। |
| 534 | लोक | यो बेग्लै लोक थियो। |
| 535 | लोग्नेमान्छे | यस्ता पनि लोग्नेमान्छे! |
| 536 | ल्याए | उनले बजारबाट कसौँडी, डाड्ड, पन्यूँ किनेर ल्याए। |
| 537 | वक्ता | काका राम्रा वक्ता हुनुहुन्थ्यो। |
| 538 | वरिपरि | स्वर सुनेर वरिपरि छिमेकीहरू जम्मा भए। |
| 539 | वर्ग | उच्च र सभ्य वर्ग पनि यस संस्कारबाट अछुतो थिएन। |
| 540 | वर्ष | यिनका नाटक हरेक वर्ष पहिला हुन्थे। |
| 541 | वसन्त | वसन्त ऋतुहरूको राजा हो। |
| 542 | वस्तु | दहीपेडा मेरो सबैभन्दा मन पर्ने वस्तु थियो। |
| 543 | वा | पन्ध्र हो वा सत्र मलाई राम्रो हेक्का भएन। |
| 544 | विद्यार्थी | त्यहाँ बीस–तीस विद्यार्थी पाठ घोकिरहेका हुन्थे। |
| 545 | विराटनगर | बा विराटनगर अमिनीमा हाकिम हुनुभएको थियो। |
| 546 | विश्लेषण | म आफ्ना वरिपरिका कुराहरू बुझ्ने र विश्लेषण गर्ने गर्दै थिएँ। |
| 547 | विषयवस्तु | यसको विषयवस्तु आदर्श र दुष्ट चरित्रका बीच हुने द्वन्द्व थियो। |
| 548 | वेटर | केटाले स्वेटरमाथि एउटा खास्टो ओढेको थियो। |
| 549 | व्यापार | त्यहाँ लागूपदार्थको व्यापार चलेको थियो। |
| 550 | शङ्ख | उनीहरू शङ्ख फुक्दै ओरालो लागे। |

| | | |
|---|---|---|
| 551 | शब्द | अधिकारी एकाध शब्द मात्र बोल्थ्यो। |
| 552 | शरीर | मेरो सम्पूर्ण शरीर गलित भएको थियो। |
| 553 | शोभा | शोभा जीवनको लामो यात्रामा लागी। |
| 554 | श्रवण | पुराणकथाहरूको श्रवण र जात्रा सम्पूर्ण मनोरञ्जन थिए। |
| 555 | श्रीमती | उनकी एउटी चिटिक्क परेकी श्रीमती थिइन्। |
| 556 | श्रेष्ठ | गङ्गाबहादुर श्रेष्ठ उसैका भान्दाइ थिए। |
| 557 | संशोधन | गरिब' कथामा श्यामजीले भाषा संशोधन गरिदिए। |
| 558 | संस्कार | उनीहरूमा त्यो संस्कार विकसित हून सकेकै थिएन। |
| 559 | संस्था | त्यति बेला कुनै वित्तीय संस्था थिएनन्। |
| 560 | सकिँदैन | त्यसो नगरे जवानहरूमा अनुशासन कायम गर्न सकिँदैन। |
| 561 | सकूँ | म उसलाई चिन्न सकूँ। |
| 562 | सक्थ्यो | भाङको विकल्प गाँजा हून सक्थ्यो। |
| 563 | सक्यो | मेरो विद्रोहले राणासत्तालाई कति हल्लाउन सक्यो त? |
| 564 | सङ्कट | यसबाट आर्थिक रूपमा सङ्कट आइपर्ने भयो। |
| 565 | सचेत | उनीहरूसँग म बडो सचेत रहन्थेँ। |
| 566 | सदस्य | मलाई स्वयंसेवक सदस्य बन्न आँट आएन। |
| 567 | सन्चो | पार्वतीलाई सन्चो छैन रे। |
| 568 | सन्दर्भ | यो अलि फरक सन्दर्भ हो। |
| 569 | सबभन्दा | बजारमा पाइने सबभन्दा उम्दा जुत्ता पाँच सुकाको हून्थ्यो। |
| 570 | सब्जी | सब्जी लिन बिहानबेलुकी नै बजार जानुपर्थ्यो। |
| 571 | समस्या | मलाई खानलाउन समस्या थिएन। |
| 572 | समाप्त | मैले गुरुकुलको सम्पूर्ण शिक्षा समाप्त गरेर स्नातक उपाधि पाएँ। |

| | | |
|---|---|---|
| 573 | समावेश | पाठ्यक्रममा इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि विषय समावेश गर्नुपर्ने थियो। |
| 574 | समोसा | हटियामा समोसा, पकौडी, मिठाई राखिएका हुन्थे। |
| 575 | सम्झना | यो एउटा सम्झना हो। |
| 576 | सम्झेँ | मैले आफ्नो जन्म निरर्थक सम्झेँ। |
| 577 | सम्झेर | पहिलेको कुरा सम्झेर मन फेरि बोझिलो भयो। |
| 578 | सम्पादक | शारदा' पत्रिकाका सम्पादक गोविन्द गोठाले थिए। |
| 579 | सम्प्रदाय | बाटामा विभिन्न सम्प्रदायका मानिस हुन्थे। |
| 580 | सम्बोधन | हामी उसलाई इलामे भनेर सम्बोधन गर्थ्यौं। |
| 581 | सम्भावना | हराएको सामान पाइने सम्भावना थिएन। |
| 582 | सम्मानित | त्यहाँ भिक्टोरिया क्रसद्वारा सम्मानित गोर्खा सैनिक जवानका सालिक थिए। |
| 583 | सरल | कथा रोचक र सरल थियो। |
| 584 | सर्दै | चालिसेहरू ठाउँठाउँमा बसाइँ सर्दै देउपुर आएर बसे। |
| 585 | सर्प | सर्प पनि मर्ने लट्ठी पनि नभाँचिने कुन उपाय छ? |
| 586 | ससुरा | घरमा सासू, ससुरा र लोग्ने हुनुहुन्थ्यो। |
| 587 | सहभागी | म यस्ता आन्दोलनमा सहभागी बन्न थालेको थिएँ। |
| 588 | सहयोग | परस्पर सहयोग गर्ने गरिन्थ्यो। |
| 589 | साँचो | चङ्ख मानिस साँचो कुराको अडकल नगरी के रहन्थ्यो? |
| 590 | साँझ | त्यस साँझ घरमा पुरेतबा आएका थिए। |
| 591 | साँढे | त्यहाँ साँढे जुध्न थाले। |
| 592 | साइकल | सडकमा साइकल कुदेका देख्न पाइन्थे। |
| 593 | साइनो | त्यही साइनो लगाएर यी गुरुहरू मलाई नाति भन्थे। |
| 594 | साउन | त्यो साउन महिना थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 595 | साझा | त्यो पछि साझा प्रकाशनबाट प्रकाशित भयो। |
| 596 | साठी | उहाँ साठी वर्षको उमेरसम्म निरोगी हुनुहुन्थ्यो। |
| 597 | साथमा | उनका साथमा पुरोहित पनि आएका थिए। |
| 598 | साथी | मेरो खेल्ने साथी बद्री हुने गर्थ्यो। |
| 599 | साधन | मनोरञ्जनको एउटा साधन पिङ पनि हुने गर्थ्यो। |
| 600 | सामग्री | म सानातिना वाक्यगठन भएका सामग्री पढ्न सक्ने भएँ। |
| 601 | सायद | गायक हुन पाएको भए सायद आज म टेलिभिजनमा गाइरहेको हुन्थेँ। |
| 602 | सास | सबैले लामो सास फेरेझैँ लाग्यो। |
| 603 | सासू | दिदी सासू र सौतेनी सासूको शासन खप्न नसकेर माइत आएकी थिइन्। |
| 604 | साह्रै | हामी साह्रै पातलो बस्तीमा पुग्यौँ। |
| 605 | सिद्धान्त | त्यसमा असल प्रवृत्तिको विजयको सिद्धान्त प्रतिपादन गरिएको थियो। |
| 606 | सिधा | सेठबाट आउने सिधा र हन्डीको भात खाँदा सानुभाइ आत्तिन थाल्यो। |
| 607 | सिफारिस | श्यामजीको सिफारिस र सम्पादकको उदारता यसका कारण थिए। |
| 608 | सिर्जना | घरमा अन्योल र आशङ्काको सिर्जना भयो। |
| 609 | सुँगुर | फोहोरको थुप्रोमा सुँगुर खेलिरहेको थियो। |
| 610 | सुके | बारीमा मकै सुके। |
| 611 | सुते | तिनीहरू आमाका काखमा थपक्क सुते। |
| 612 | सुत्दा | ऊ राति सुत्दा पनि सुपारी चपाईचपाई निदाउँथ्यो। |
| 613 | सुत्नु | बच्चा लिएर आगोनजिक सुत्नु जोखिम हुन्छ। |
| 614 | सुत्ने | कच्ची छप्परहरूमा सुत्ने र खाने प्रबन्ध गरिएको हुन्थ्यो। |
| 615 | सुनेँ | मैले प्रसिद्ध कलाकारका बारेमा सुनेँ। |
| 616 | सुन्तला | सुन्तला त्यहाँको विशेषता थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 617 | सुरु | जहाँबाट सुरु गरे पनि हुन्छ। |
| 618 | सेतो | सेतो सत्तलमा एक जोडी माई–बाबा बस्ने गर्थे। |
| 619 | सोचेँ | अधिकांश मानिस खुम्चिएरै बाँच्दो रहेछ, मैले सोचेँ। |
| 620 | सोच्न | त्यसरी सोच्न ममा चेतना विकसित भएको थिएन। |
| 621 | सोच्यो | उसले के सोच्यो कुन्नि। |
| 622 | सोधे | फेरि तत्कालै शङ्कालु स्वरमा सोधे। |
| 623 | सोध्नु | हामीलाई आफ्ना सामु उभ्याएर सोध्नु गुरुको दैनिकी थियो। |
| 624 | स्थापना | नेपाल रेडियोको स्थापना भएपछि गायक बन्ने सोख पलायो। |
| 625 | स्रोतहरू | आयका अरू सहायक स्रोतहरू पनि छन्। |
| 626 | स्वाद | कथा त सुनेर स्वाद लिने मात्र हो भन्ने लाग्थ्यो। |
| 627 | स्वीकार | म प्रेमलाई भावनाको परिधिसम्म मात्र स्वीकार गर्थें। |
| 628 | स्वेटर | केटाले स्वेटर लगाएको थियो। |
| 629 | हँ | किन आफूभन्दा सानो भाइलाई रुवाएकी हँ? |
| 630 | हड्डी | त्यसबेला हड्डी फुटेझैँ अनुभव हुन्थ्यो। |
| 631 | हद | त्यहाँको हद नाघेर जान पाइन्नथ्यो। |
| 632 | हराए | उनले पैसा र अरू सामान हराए। |
| 633 | हल्का | उसले हल्का आकाशे रङको समिज लगाएकी थिई। |
| 634 | हस्तक्षेप | अरूहरूले हस्तक्षेप गरे र ऊ चोट खानबाट बच्यो। |
| 635 | हाँगा | किम्बुको रूखमा चारओटा हाँगा थिए। |
| 636 | हातखुट्टा | लाठीले धेरैका हातखुट्टा भाँचे। |
| 637 | हाने | तिनलाई शोभाभगवतीमा गोली हाने रे। |
| 638 | हान्यो | मेरो प्रस्तावमा सानुभाइले सहीछाप हान्यो। |

| | | |
|---|---|---|
| 639 | हामी | हामी उनीहरूलाई उठीबास गराउन सक्थ्यौँ। |
| 640 | हाम्रो | हाम्रो परिवारमा आमा र दिदी मात्र थिए। |
| 641 | हिँडे | भाइहरू घरबाट भागेर हिँडे। |
| 642 | हिउँद | त्यो बस्ती हिउँद लागेपछि गुल्जार हुन्थ्यो। |
| 643 | हिजो | हिजो घरमा काम परेकोले भाइ पढ्न आउन सकेन। |
| 644 | हिन्दी | मलाई हिन्दी भाषाको पचहत्तर प्रतिशत ज्ञान भयो। |
| 645 | हुँदाहुँदै | पद्मशमशेरको खुकुलोपना हुँदाहुँदै पनि विद्यार्थीदमन थियो। |
| 646 | हुन्थे | कथा भन्नेमा मोतीलाल र मोहनलाल हुन्थे। |
| 647 | हुल | जवानले हुल र दङ्गामा पक्डेर ल्याएको हुल्याहातिर हेर्‍यो। |
| 648 | हेरे | जता हेरे पनि विनाशैविनाश थियो। |
| 649 | होइन | अनुहार मात्र होइन बोलीचालीमा पनि असल छन्। |
| 650 | होडबाजी | प्रभुहरूकै माझ होडबाजी थियो। |
| 651 | होस् | राजा होस् वा रङ्क उनी सबैलाई समान रूपबाट हेर्थे। |
| 652 | हौँ | यिनीहरू सन्न्यास लिएका हौँ भन्थे। |
| 653 | अँगार | अँगार पनि त्यति कालो हुँदैन। |
| 654 | अँजुली | म अँजुली भरेर पानी पिउन चाहन्थेँ। |
| 655 | आँत | हजुरआमाको आँत पनि दह्रै थियो। |
| 656 | आँप | त्यहाँ लिची, आँप र अरू रूखहरूको बगैँचा थियो। |
| 657 | इँट | यी इँट दुई–तीन सय वर्ष पुराना थिए। |
| 658 | उँट | त्यहाँ साइकल, उँट आदि दर्जाका हाँगाहरू थिए। |
| 659 | कम्ती | त्यहाँ दुई–तीन सयभन्दा कम्ती इँट थिए। |
| 660 | काँक्रो | पूजामा काँक्रो, उखु आदिको प्रसाद बाँड्ने चलन थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 661 | कुँवर | जङ्गबहादुर कुँवर राणाशासनका पहिला व्क्ति थिए। |
| 662 | खड्ग | खड्ग परम्परागत हतियार हो। |
| 663 | गएँ | म उसको पछिपछि लखेट्दै गएँ। |
| 664 | गणित | रत्नध्वज जोशीले मेरा बासँग गणित पढेका थिए। |
| 665 | गाँज | त्यहाँ एउटा बाँसको गाँज पनि थियो। |
| 666 | गाँस | उसले एक गाँस मात्र मुखमा हाल्यो। |
| 667 | गुँड | मेरो गुँड हजुरबाकै खोकिलो थियो। |
| 668 | घोडा | घोडा बेतोडसँग कुद्न थाल्यो। |
| 669 | ङरङर | कुकुरबिराला ङ्यारङ्यार र ङरङर गरेको देख्थेँ। |
| 670 | चाल | मैले चाल नपाउने गरी कसरी खोल्यो होला चोरले? |
| 671 | झकझक | रेलगाडी झकझक छकछक गर्दै आएर रोकियो। |
| 672 | डुब्न | मन निराशामा डुब्न थाल्यो। |
| 673 | ढ्वाङ | रूखका कापकापमा ढ्वाङ राखिएका थिए। |
| 674 | तँछाडमछाड | घण्टी लाग्नासाथ हामी तँछाडमछाड गर्दै निस्कन्थ्यौँ। |
| 675 | ताँती | मानिसको ताँती कहिल्यै टुङ्गिँदैन। |
| 676 | तिकडम | उनीहरू तिकडमबाजी पनि गर्थे। |
| 677 | थाँक्रो | यिनैको आत्मीयताको थाँक्रो समातेर बाँच्ने क्रम सुरु गरेँ। |
| 678 | दिऊँ | तिमीलाई के दिऊँ? |
| 679 | दिए | यिनलाई हाम्रा बाजेले घरखेत दिए। |
| 680 | नाचगान | मित्रताको आधार नाचगान र सङ्गीत थियो। |
| 681 | नाचघर | दरबारहरूमा निजी नाचघर हुन्थे। |
| 682 | पहुँच | माथिसम्म उसको पहुँच थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 683 | पाट | ती पाट मात्र लगाउँथे। |
| 684 | पेच | यिनलाई राजनीतिमा ठूलो पेच परेको थियो। |
| 685 | बज्र | उत्तरतिर रानीपोखरीको डिलमा बज्र परेको थियो। |
| 686 | बाँध | सशस्त्र पुलिसको बाँध भत्काउँदै जनता अघि बढ्न थाले। |
| 687 | बाघ | बाघ र भालुको भय हुनाले एक्लै हिँड्न सकिँदैनथ्यो। |
| 688 | बाघझैं | हजुरबा बाघझैं गर्जनुहुन्थ्यो। |
| 689 | बाफसँग | उनीहरूका नाक बाफसँग मिलेका सुवासहरू सुँघ्थे। |
| 690 | बास | बास नभएकाहरूले यसलाई आफ्नो घर तुल्याएका थिए। |
| 691 | बिँड | हातमा लामा बिँड गरेका बाजा देखिन्थे। |
| 692 | बिउ | बिउ राम्ररी घाममा सुकाएर राख्नुपर्छ। |
| 693 | बिघ्न | हाम्रो क्रियाकलापमा बिघ्न पुऱ्याउने कोही थिएन। |
| 694 | बुधबार | म बुधबार लाग्ने हटिया घुम्न जान्थेँ। |
| 695 | भुँडी | म आफ्नै भुँडी भर्ने धुनमा लागेँ। |
| 696 | भुइँ | भुइँ रगतले भिजेको थियो। |
| 697 | माझबाट | केशराशिको माझबाट गोरो अनुहारले चियाइरहेको थियो। |
| 698 | मेख | मेख मर्नेगरी उसले गाली गऱ्यो। |
| 699 | लाभ | यसै स्थितिको लाभ उठाउने विचारले म आरुबारी गएँ। |
| 700 | शीघ्र | जहाजबाट उत्रिएपछि शीघ्र गतिको ट्रेन चढ्नुपर्थ्यो। |
| 701 | सकूँ | म उसलाई चिन्न सकूँ। |
| 702 | साँझ | एक साँझ बूढा तामाङ हाम्रो आँगनमा टुप्लुक्क आए। |
| 703 | साँझको | साँझको बढ्दै जाँदो अँध्यारोमा त्यहाँ धेरै साथी हुन्थ्यौँ। |
| 704 | साँध | त्यो पुल पशुपति र गौचरको साँध थियो। |

| | | |
|---|---|---|
| 705 | साग | घर फर्कंदा हरियो साग लिएर आउनुहुन्थ्यो। |
| 706 | साथसाथ | अध्ययनका साथसाथ उनी भात पकाउने काम पनि गर्थे। |
| 707 | सिँगान | त्यतिखेर सिँगान पुछ्न नजान्दै कापी र कलम दिने चलन थिएन। |
| 708 | सिँचाइ | समयको सिँचाइ पाएर त्यो फेरि पलाएर आउँछ। |
| 709 | सेवा | हजुरबा गाईको सेवा गर्नुहुन्थ्यो। |
| 710 | सोच | यो एउटा निरर्थक सोच थियो। |
| 711 | सोधपुछ | कसैले मलाई केही सोधपुछ गरेनन्। |
| 712 | ह्वाङह्वाङ | ढ्वाङगोपाल ह्वाङह्वाङ गरेर बोल्थ्यो। |